स्नातक खण्ड -2
हिन्दी प्रतिष्ठा
चतुर्थ पत्र

(1)

Page No.:
Date: / /

प्रश्न (1) "भोर का आवाहन" शीर्षक निबंध का सारांश लिखें।

उत्तर भोर का आवाहन एक ललित निबंध है, लेकिन भावों अथवा विचारों की तरलता ने इसे विचारात्मक निबंध की ओर खिंचने का प्रयास किया।

भोजपुरी के एक मंगलगीत की पहली कड़ी है - 'ए भोरे रे भइले भिनुसार चिरइयाँ एक बोलेले, मिरगा बन चुगेले।' इसमें भोर का स्मरण पितरों का स्मरण, घर के अभाव का स्मरण और मंगल के अमोघ प्रभाव का स्मरण किया जाता है। इसका कूठ बहुत महीन तथा सुरीला होता है इसे सुनने का सौभाग्य भी बहुत कम लोगों को मिलता होगा, क्योंकि बहुत कम लोग शुकतारा का उदय देखने के उत्कंठित होते हैं।

भोर तो सब जगह होती है और एक-दो पंछी भी हर एक मुंडेरी पर आकर मनुष्य को प्रकृति के साथ पुराने सम्बन्धों की गाथा, मनुष्य उसे सुने या न सुने, चाहे न चाहे सुना ही जाते हैं।

व्यष्टिरूप से आज साहित्य में तप की भी अर्चना है,

आनन्दन की परिकल्पना है, बुद्धिवाद का विलास है और भावना की रंगिनी है, पर इन सबके अंकन में विशृंखलता ऐसी है जो पूर्ण मंगल की अवतारणा नहीं होने देती। मंगल के लिए सामूहिक आयोजना भी है, पर सिद्धि नहीं है। इसका कारण यदि ढूढ़ना हो तो उस चिरइयाँ की आवाज सुनना चाहिए और तब यह लगेगा कि उस एक चिरइयाँ में जैसे तत्सत की पूर्ण उपलब्धि हो गई और विश्व की गति उसके कन्ठ के एक साथ ~~एक साथ~~ खुल पड़े हो,

इस तरह हम कह सकते हैं कि 'भोर का आवाहन' ऐसा निबंध है जिसका बाह्यस्वरूप ललित निबंध का है और आभ्यांतर में विचार पुलक भर रहे हैं। लोकगीत और लोक-जीवन के माध्यम से इन्होंने नए प्रभाव के आवाहन का संदेश दिया है। विश्वास, एकता, सामानता और सौहार्द के लिए प्रकृति की निश्छलता को हृदय में उतारना होगा।

भाव में सहजता के साथ उतारने में लेखक को आशातीत सफलता मिली है और हमारे नव चेतना और नव युग की प्रतीकित करता है।

— x —